अंक 28

वातें वाग्धारा नी

सितम्बर, 2022

VAAGDHARA

"घर के बीज उगलेंगे सोना, देशी खाद को अब नहीं खोना"

प्यारे किसान भाइयों ,बहनों, प्यारे बच्चों,
सादर वंदे

जैसा कि सभी साथियों को विदित है की वाग्धारा विगत 2 दशकों से भी अधिक समय से क्षेत्र में स्वराज की परिकल्पना, स्वराज की जीवन शैली तथा सबंधित प्रयास जिसमें कि हमारी प्रकृति, हमारा जीवन तथा हमारे संस्कार आपस में किस प्रकार से किसी को नुकसान पहुंचाए बिना सत्त व टिकाऊ विकास की ओर बढ़ सके| इस हेतु वाग्धारा के साथियों द्वारा समुदाय स्तर पर संवाद स्थापित करते हुए वर्षों से हमारे जल, जंगल, जमीन, जानवर, हमारे बीच हमारी परंपरागत फसलें, हमारी वनस्पति तथा हमारे रीति-रिवाजों के साथ किस प्रकार से कष्टों से दूर रहकर सुखी जीवन जिया जाए उसके लिए प्रयासरत रहते हैं और जिसका उत्कृष्ट परिणाम कोरोना के समय में वाग्धारा को देखने को मिला जिससे समस्त साथी अपने आपको गर्व महसूस करते रहे है, कोरोना के समय पलायन होकर आने वाले परिवारों को समुदाय से किस प्रकार से सहयोग से जोड़ा जा सके, तथा समुदाय के युवाओं द्वारा बच्चों की शिक्षा के नुकसान को पूरा किया जा सके तथा बीमारी के समय स्थानीय स्तर पर कैसे जांच व दवाई की मदद की जा सके उसके लिए प्रयासरत रहे और उसमें कई हद तक सफलता पाई जिससे यह दृढ़ विश्वास हो गया कि स्थानीय प्रयास हमारे हमेशा ही सुदृढ़ होते है सशक्त होते है |

वाते पत्रिका के माध्यम से आप तक प्रत्येक माह जो संदेश पहुंचाते हैं उसमें उस माह की गतिविधियां चाहे वह खेती किसानी कि हो या हमारी आने वाली पीढ़ियों की हो अथवा हमारी लोकतंत्र में भागीदारी की हो, सरकार से हमारे जुड़ाव की हो या हमारी जिम्मेदारियों की हो उन विषयों पर चर्चा होती रहती है |

वाग्धारा विगत कई वर्षों से संवाद यात्रा तथा स्वराज सम्मेलन करता रहा है, साथियों का सुझाव हमेशा यह रहा है हमें हमारी बात को हमने जो उदाहरण प्रस्तुत किए उन विषयों को लेकर के दूसरे क्षेत्रों में भी जाना चाहिए, इस दिशा में इस वर्ष 11 सितंबर 2022 से स्वराज संदेश संवाद पदयात्रा बांसवाड़ा से जयपुर तक आयोजित होने जा रही है, 2 अक्टूबर को स्वराज सम्मेलन के रूप में पूर्ण होगा, इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य है कि किस प्रकार से हर परिवार अपनी जिम्मेदारी समझ कर अपनी निर्भरता को कम करें, वह कृषि खाद्य एवं पोषण के लिए स्वयं ऐसा जीवन जिए कि वह खुशहाल हो सके, हमारे गांव में कौन से तरीके अपनाए जाए, समाज में हमारी संस्कृति में हमारे परंपरागत क्या तरीके थे जिससे कि हमारी निर्भरता कम थी, उनको जानना पहचानना व आज के वैज्ञानिक युग में उपर्युक्त वैज्ञानिक तकनीकों के साथ किस प्रकार से हम आगे बढ़ सकते हैं, खुशहाल रह सकते है, इन सब को लेकर यह संवाद यात्रा है |

अंत में हमारा आग्रह सरकार के साथ भी होगा की ऐसी नीतियां व ऐसी परिस्थितियां का निर्माण हो जिसमे स्वराज स्वतः फल फूल सके सशक्त हो सके मजबुत हो सके |

आजादी के 75 वर्ष हमारी परम्परा जो वसुधा को ही कुटुंब मानती है और गांधीजी का स्वराज भी यही कहता है कि इंसान का इंसान के प्रति, इंसान का प्रकृति के प्रति, प्रकृति के घटकों का आपस में तथा पीढियों का युवा से बचपन और बुजुर्गों का आपस में संवाद कैसे सुदृढ़ किया जाए कि हम विनाश के विज्ञान की और न बढ़कर सतत व संरक्षित विकास पर बात कर पाए हमारा अंतिम उद्धेश्य यही होना चाहिए यही संवाद यात्रा का मूल लक्ष्य हम सरकार से भी यही आग्रह करेंगे कि इसे मजबूत करने में ऐसी नीतियों का निर्माण हो जिससे हमारी ग्राम पंचायत पर विचार कर सके, इसे मजबूत कर सके ,आपकी भागीदारी हमारे साथियो की भागीदारी अधिक से अधिक इस विचार को सुदृढ़ करेगी, हम बरसों से जो प्रयास करते आ रहे हैं इसे दुनिया तक ले जाने का यह अच्छा अवसर है |

मैं संगठन के पदाधिकारियों, समाज के हर तबके से आग्रह करता हूं कि स्वराज कि इस विचारधारा को मजबूत करें जैसा की वाग्धारा का मानना है कि आदिवासी जीवन शैली स्वराज की पहली और पूर्ण सीढ़ी है जो कि हमारी परंपराओं से हमें मिली है, हमारे पूर्वजों से मिली है, हमारी जीवन शैली से हमें मिली है, इस स्वराज की परिकल्पना को हमें अधिक से अधिक ज्यादा से ज्यादा दुनिया तक ले जाना है ताकि हम आदिवासी क्षेत्र आदिवासी समाज के लोग दुनिया में इस स्वराज के उदाहरण को पूर्ण रूप से स्थापित कर सकें

धन्यवाद
जय गुरु
जय भारत

आपका अपना
जयेश जोशी

स्वराज यात्रा में चलो

स्वराज संदेश –संवाद पदयात्रा
बांसवाड़ा से जयपुर

स्वराज यात्रा में चलो

आचार्य विनोबा भावे की जयंती दिनांक 11 सितम्बर 2022 से प्रारंभ होकर महात्मा गाँधी जयंती 02 अक्टूबर 2022 तक

साथियों,

गाँधी जी के स्वराज के सपने के विरुद्ध आज व्यापारोन्मुख नीतियों के कारण देश में संकटग्रस्त, वंचित एवं आदिवासी समुदाय अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए किसी प्रकार अपनी परम्पराओं को बचाने की जुगत में लगा हुआ है। स्वराज को सही मायने में जीते हुए आदिवासी व कृषक समुदाय ने सदियों से आज तक प्राकृतिक संसाधनों का प्रतिरक्षण किया है तथा जीवन मूल्यों को समाज के लिए जीवित रखा है। आज़ादी के 75 वर्ष के पश्चात् भी ये अति-दुखद है कि प्रकृति के रक्षक, अन्नदाता तथा हमारी ग्रामीण संस्कृति के संवाहक आज भी बुनियादी खुशियों तथा स्वस्थ विकास से वंचित हैं।

वैश्विक समस्याओं के कारण संकटग्रस्त तथा प्रभावित समुदाय के समाधान, आज के परिप्रेक्ष्य में विकास के सही उदाहरण स्वराज तथा स्वराज द्वारा समाधान को समाज और समुदाय के बीच में हमारी स्वराज की गतिविधियों को चर्चा में लाकर हम सब पीढ़ियों का पीढ़ियों व परिवार के साथ, समाज का सरकार के साथ तथा समाज के प्रत्येक घटक का आपसी संवाद, प्रकृति का प्राणी मात्र के साथ संवाद को पुन: स्थापित करने की आवश्यकता है।

आइये, आज हम सब मिल कर सच्चे स्वराज की संकल्पना को साकार करने के लिए आयोजित इस स्वराज सन्देश संवाद पदयात्रा में अपनी भागीदारी निभाकर देश तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करें।

स्वराज संदेश - संवाद पदयात्रा

प्रतिवर्ष की भांति दक्षिणी राजस्थान एवं उसकी सीमाओं से जुड़े हुए मध्य प्रदेश एवं गुजरात के आदिवासी जिलों के समुदाय द्वारा वाग्धारा के सहयोग से कृषि एवं स्वराज सम्प्रभुता समागम एवं यात्रा का आयोजन किया जाता रहा है। इस समागम में देश भर से विषय विशेषज्ञ, विचारक, प्रमुख रूप से आदिवासी क्षेत्र के हज़ारों लघु व सीमांत कृषक एवं स्वराजी भागीदारी करते हैं एवं विभिन्न विषयों जिनमें मुख्यत: जल, जंगल, जमीन, पशु, बीज, खाद्य व पोषण स्वराज, बाल अधिकार इत्यादि पर गहन चर्चा करते हैं, साथ ही समुदाय के प्रमुख सम्बंधित मुद्दे एवं उनसे जुड़ी हुई मांगों को नीति निर्माताओं तक पहुंचाते हैं।

इस वर्ष समागम का आयोजन एक नए स्वरूप **"स्वराज संदेश - संवाद पदयात्रा"** के रूप में आयोजित किया जा रहा है। यह पदयात्रा बांसवाड़ा से आचार्य श्री विनोबा भावे की जयंती **दिनांक 11 सितम्बर, 2022 से प्रारम्भ होकर दिनांक 01 अक्टूबर, 2022** को जयपुर पहुंचेगी। यात्रा के विस्तार में महात्मा गाँधी जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक 02 अक्टूबर, 2022 को जयपुर में **"स्वराज संकल्प - आग्रह सम्मेलन"** राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

यात्रा का उद्देश्य

1) आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र की जीवनशैली में स्वराज की विचारधारा पर आधारित सच्ची खेती, सच्चा बचपन एवं सच्चा स्वराज के संदेश एवं सम्बंधित पद्धतियों को अन्य क्षेत्रों में पहुँचाना।
2) सरकार एवं अन्य हितधारकों के साथ जुड़ाव स्थापित करते हुए सामूहिक ज्ञान को एक छत के नीचे लाना एवं एक दूसरे की स्वराज की पद्धतियों को सीखने एवं व्यवहार में लाने हेतु विचारों का आदान-प्रदान करना।
3) विभिन्न जिलों के समुदायों के मुद्दों को चिन्हित करना, उन पर चर्चा करना एवं उनके द्वारा समाधान के लिए किये गए प्रयासों के प्रति राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर के हितधारकों में समझ बढ़ाना तथा पूर्वधारणाओं को दूर करते हुए उन्हें संवेदनशील बनाना।
4) अन्य समुदाय के सदस्यों को प्रेरित करने एवं सकारात्मकता की भावना पैदा करने के लिए स्वराज के संभावित मॉडल, विभिन्न सम्बंधित मुद्दों के संभावित समाधान के साथ-साथ व्यक्तियों एवं संगठनों की सफलता की कहानियों को यात्रा के माध्यम से उजागर करना।
5) ग्राम सभा एवं पंचायत की मजबूती के उद्देश्य को केंद्रित करते हुए पंचायती राज संस्थानों के सदस्यों एवं स्वराजियों के साथ गहन चर्चा में गांधीजी के रचनात्मक कार्यों को समाहित करते हुए ग्राम सभा में स्वराज की रूपरेखा को स्थापित करते हुए मज़बूत करना।

यात्रा मार्ग: बांसवाड़ा - घाटोल - पीपलखूंट -छोटी सादड़ी - निम्बाहेड़ा - चित्तौडगढ़ - भीलवाड़ा - कोटड़ी- शाहपुरा - केकड़ी - मालपुरा - चौसला - फागी - रेनवाल - सांगानेर - जयपुर

चर्चा के मुख्य बिन्दु

विषय	समुदाय से आग्रह	सरकार से आग्रह
बीज स्वराज - बाज़ार पर निर्भरता को कम करने के लिए घर के बीज का संरक्षण तथा अधिक से अधिक फसलों का संकलन।	• घर का बीज घर में, फले का बीज फले में, गाँव का बीज गाँव में संरक्षित करना। • गाँव में बाहरी बीज की निर्भरता कम करना।	• बीज सम्प्रभुता को प्रोत्साहित करने हेतु स्थानीय बीजों का राज्य बीज निगम से उत्पादन करवाना। • स्थानीय बीजों को विविधता के साथ सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से वितरण में शामिल करना।
जल स्वराज - गाँवों में वर्षा जल का संचयन एवं संरक्षण।	• खेतों में मेड़बंदी, नालों का नियमित रखरखाव, वर्षा जल संचयन व पुनर्भरण हेतु कार्य सम्पादित करना। • उक्त कार्यों को मनरेगा के तहत वार्षिक कार्य योजना में जुड़वाना।	• घर का पानी घर में, खेत का पानी खेत में एवं गाँव का पानी गांव में संचयन हेतु अधिक से अधिक जल संरक्षण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करना। • मनरेगा के अंतर्गत जल संरक्षण को बढ़ावा देना।
मृदा स्वराज -मिट्टी के कटाव को रोकना एवं मिट्टी के स्वास्थ्य को सुधारना।	• मिट्टी को सम्पत्ति की तरह बचाकर रखना। • मिट्टी कटाव के लिए सामुदायिक मेड़बंदी, भूमि समतली करण को बढ़ावा देना। • फसल चक्र में बदलाव करते हुए वर्ष में एक बार दलहन वर्गीय खेती को अपनाना।	• मिट्टी के कटाव को रोकने हेतु मनरेगा के अंतर्गत ज्यादातर मिट्टी सुधार कार्यों को बढ़ावा दिया जाए। • पशुओं के अपशिष्ट को खाद के रूप में रूपांतरित करने के लिए परिवार स्तर पर ज़्यादा से ज़्यादा कम्पोस्ट निर्माण को बढ़ावा दिया जाए।
खाद्य एवं पोषण स्वराज-पारम्परिक खाद्य फसलों की खेती एवं स्थानीय पौष्टिक खाद्य पदार्थ का उपयोग।	• छोटे अनाज एवं अन्य पारम्परिक फसलों के बीज को संरक्षित करते हुए उन्हें अपनी खेती में अपनाना। • बच्चों को पारम्परिक खाद्य पदार्थ से निर्मित व्यंजनों से पोषित करना।	• पारम्परिक फसलों जैसे छोटे अनाज एवं दलहनी फसलों की खेती को बढ़ावा देते हुए पौष्टिक खाद्य पदार्थों को खाद्य निगम के कार्यक्रमों में शामिल कर उनका वितरण सुनिश्चित करना।
वन स्वराज - वनों को सहेजना एवं संरक्षित करना।	• प्रत्येक परिवार कम से कम पांच प्रजाति के पौधे जिसमें मुख्यत: आम, आंवला, अमरूद, जामुन, पपीता, टिमरू, महुआ, सीताफल, कटहल आदि अपने खेत की मेड़ पर लगावें, जिससे फल, जलाऊ व इमारती लकड़ी व पशुचारे की आवश्यकता की पूर्ति की जा सके।	• पचास वर्षों की शामलात भूमि को चिन्हित करना। • चिह्नित भूमि को स्थानीय वन के रूप में विकसित करना।
वैचारिक स्वराज-अपने ज्ञान एवं नैतिक क्षमता का निरंतर एवं सतत् विकास व वृद्धि करते हुए विवेकशील बने रहना।	• वैचारिक स्वराज को संरक्षित करते हुए पीढ़ियों का आपस में संवाद, वृद्धों का युवाओं के साथ संवाद स्थापित करना। • ग्रामीण संस्कृति को सहेजने के लिए ग्राम सभा में भागीदारी कर उस पर चर्चा करना।	• स्कूलों में स्वराज की चर्चा स्थापित करवाना। • ग्राम सभा में समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप - परंपरागत तथा आधुनिक ज्ञान संयोजन वाली वांछित बुनियादी शिक्षा पर चर्चा सुनिश्चित करवाना।
सांस्कृतिक स्वराज - पारम्परिक संस्कृति, पद्धतियों एवं प्रथाओं को पुनर्जीवित व पुन: स्थापित करना।	• हमारी पारम्परिक प्रथाएँ जिसमें आपसी व्यापार, सहयोग इत्यादि शामिल थे जैसे आदिवासी समुदाय में हलमा,नौतरा,हाट बाजार और अन्य समुदाय में हाट बाजार, आपसी मदद इत्यादि को पुनर्जीवित व पुन: स्थापित करना।	• पारम्परिक प्रथाओं को पुन:स्थापित करने के पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना। • क्षेत्र वार परिस्थितियों का निर्माण कर इन प्रथाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करवाना।

यात्रा का नक्शा

कृषि एवं आदिवासी स्वराज मंच

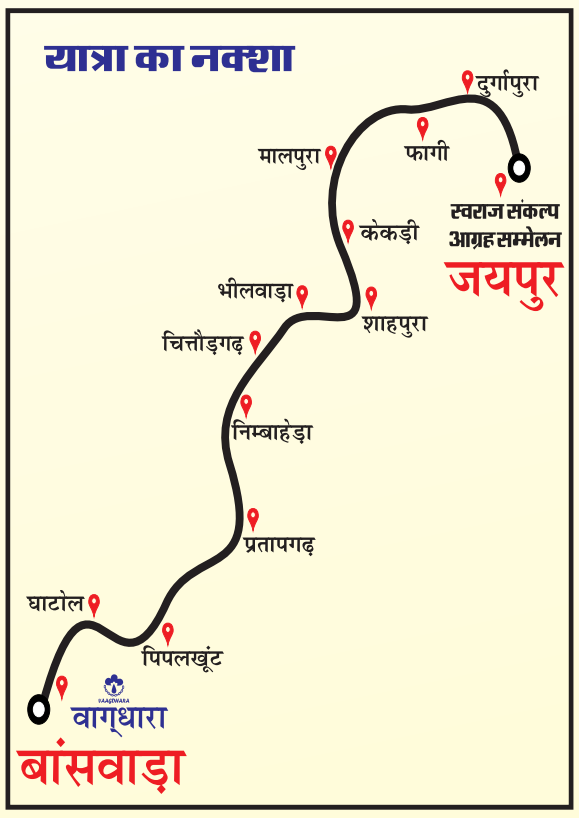

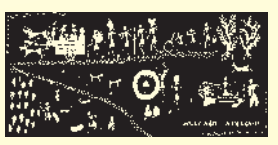

VAAGDHARA

वाग्धारा विगत 25 वर्षों से दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में कार्यरत एक स्वैच्छिक संस्था है। आदिवासी क्षेत्र में होने की वजह से संस्था द्वारा आदिवासियों की जीवन शैली, जीवन मूल्य एवं जीवन दर्शन का गहराई से अध्ययन और इसके तहत मानव एवं मानव के रिश्ते और मानव तथा प्रकृति के रिश्ते को समझने का प्रयास किया गया है। कार्यक्रम के तौर पर संस्था सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सच्चा स्वराज को लेकर राजस्थान, गुजरात व मध्य प्रदेश में कार्य करते हुए, समाज की संप्रभुता और टिकाऊ विकास को सुनिश्चित करने और समाज की सम्मिलित विकास की सोच के साथ युवाओं को तैयार कर सामाजिक विकास के लिए उनकी भागीदारी को बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत है जिस हेतु कई प्रकार के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन सामुदायिक संगठनों के साथ मिल कर किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण है समुदायों की मांग को विभिन्न स्तरों तक सफलतापूर्वक ले जाना और इसके लिए एक प्रभावी कार्य है समुदाय के प्रतिनिधियों को एक ऐसा स्थान प्रदान करना जहाँ वे बैठकर नीतिगत कार्यों के लिए नीति निर्माताओं से चर्चा कर सकें।

बारिश का मौसम अपने अंतिम पड़ाव पर है और फसलों में पानी की कमी होगी। नमी बनाए रखने के लिए कटे हुए अनाज के पुआल और सूखे पत्तों का उपयोग मल्चिंग के रूप में करें।

ग्राम सेवा का तीसरा अध्याय गांव या घूर गांधी जी के शब्दों में

मांटेग्यू चैंप्सफोर्ड सुधार में कुछ हाथ रखने वाले मिस्टर कर्टिस ने सन 1918 में भारत की यात्रा करते समय हमारे गांव के बारे में लिखते हुए कहा है" दूसरे देशों के गांव के साथ हिंदुस्तान के गांव की तुलना करते हुए मुझे ऐसा जान पड़ा, मानव हिंदुस्तान के गांव घूर पर ही बसाए गए हैं" यह आलोचना हमें कढ़ाई लग सकती है लेकिन इसके अंदर की सच्चाई से कोई इनकार नहीं कर सकता । किसी गांव में चले जाइए, आपको उसका घूर सबसे पहले नजर आवेगा और वह उसी जमीन पर होगा । गांव के अंदर घुसने पर भी बाहर देखी हालत से कोई बहुत अंतर नहीं दिखाई देगा । वहां भी रास्तों रास्तों में गंदगी मिलेगी । रास्ते और गलियों में लड़के जहां भी चाहे पाखाना फिरते हुए ही मिलेंगे । पेशाब तो बड़े-बड़े भी चाहे जहां करते मिलेंगे । वास्तव में अधिक अंतर है भी नहीं । यह टेप आदत चाहे जितनी पुरानी हो, फिर भी कुटेव है और उसे निकाल डालना चाहिए । मनुस्मृति आदि हिंदू धर्म शास्त्रों में, कुरान शरीफ में, बाइबिल में, जरथुस्त्र कुछ फरमानों में रास्ते, आंगन,घर ,नदी ,नाले को को गंदा न करने के संबंध में सुक्ष्म सूचनाएं हैं । लेकिन आज तो हम उन का अनादर ही कर रहे हैं और इस हद तक की तीर्थ क्षेत्रों में भी खासी गंदगी होती है ।और ,गांव की अपेक्षा ज्यादा होती है यह कहने में भी शायद अत्युक्ति न होगी । हरिद्वार में गंगा तट को गंदा करते हजारों स्त्री-पुरुषों को मैंने देखा है ।आदमियों के बैठने के स्थानों पर यात्री पाखाना फिरते हैं, अपना मुंह वगेरे गंगा में होते हैं और फिर वही पानी भरते हैं । तीर्थ क्षेत्रों में तालाबों को इसी प्रकार गंदा करते मैंने यात्रियों को देखा है । ऐसा करने में दया धर्म का लोप होता है और समाज-धर्म के अवगणना होती है । ऐसी लापरवाही से हवा खराब होती है ,पानी बिगड़ता है । फिर हैजा ,टाइफाइड वगैरह छूट के रोगों के फैलने में क्या आश्चर्य है ? हैजें की उत्पत्ति का कारण ही गंदा पानी है । टाइफाइड के बारे में भी बहुत अंशो में यही कहा जा सकता है। कहने व्यक्ति ना होगी कि लगभग 75% रोग हमारी गंदी आदतों की वजह से होते हैं । इसलिए ग्राम सेवक का पहला धर्म ग्रामवासी को स्वच्छता सफाई की तालीम देने का है । यह तालीम देने में व्याख्यान और विज्ञापनों का कम से कम काम है । कारण गंदगी की ऐसी जड़ जम गई है कि गांव वाले स्वयंसेवक की बातें सुनने को तैयार नहीं हो, और सुन भी ले तो उसके अनुसार करने का उत्साह नहीं रखते । विज्ञापन बाटिए तो पड़ेंगे नहीं बहुतों को तो पढ़ना आता नहीं जिज्ञासु ना होने के कारण दूसरों से भी नहीं पढ़वाते । इसलिए स्वयंसेवक का धर्म हो जाता है पदार्थ पाठ देना । गांव वालों से जो कराना हो ,वह खुद करके दिखावे ,तभी वे करेंगे और जरूर करेंगे । इसमें किसी की शंका नहीं रखनी चाहिए । तथापि धीरज की आवश्यकता तो रहेगी ही ।2 दिन हमने सेवा कर दी और फिर लोग अपने आप करने लग जाएंगे ,इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए । स्वयंसेवक को चाहिए कि गांव वालों को बटोर कर पहले तो उन्हें उनका धर्म समझावे और तत्काल उनमें से स्वयंसेवक मिले या ना मिले ,उसे सफाई का काम शुरू कर देना चाहिए उसे गांव मैं से फावड़ा ,टोकरी ,झाड़ू यह चीजें जुटा लेनी चाहिए । यह नहीं हो सकता कि वापसी का वादा पाने के बाद भी लोग यह चीजें देने से इंकार करें । इसके बाद स्वयंसेवक रास्तों की जांच करें और जहां पाखाना पेशाब हो वहां पहुंच जाए पाखाने को फावड़े से अपनी टोकरी में उठा ले और उस जगह पर मिट्टी डाल दें जहां पर पेशाब हो वहां भी फावड़े से ऊपर की गीली मिट्टी टोकरी में उठा ले और उस पर आसपास के साथ धूल बिखेर दे । आस पास कूड़ा हो तो उसे झाड़ू से बटोर कर एक किनारे उसकी कुड्ढी लगा दे और पाखाने को ठिकाने लगाने के बाद कूड़े को उसी टोकरी में बटोर कर के ठिकाने लगावे । इस पाखाने को कहा डालने का प्रश्न महत्व रखता है । उसमें सफाई और दाम दोनों है । बाहर पड़ा पाखाना बदबू फेलाता है । मक्खियां उस पर बैठकर तब हमारे बदन पर आती हैं और फिर हमारे खाने पर बैठकर रोग की छूत चारों ओर से फेलाती है । यदि हम इस क्रिया को सूक्ष्म दशक यंत्र द्वारा देखें तो हम जो बहुतेरी मिठाईयां वगैरह खाते हैं उन्हें छोड़ देना पड़े । यह पाखाना खेतिहर के लिए सोना है । खेत में डालने से उनकी बढ़िया खाद बनती है और बड़ी अच्छी पैदावार होती है चीन वाले इस काम में सबसे ज्यादा होशियार है कहते हैं कि वे पाखाने पेशाब को सोने की तरह बटोरकर करोड़ो रुपए बचाते हैं और साथ ही बहुतेरे रोगों से रक्षा पाते हैं। अतएव सेवकों को चाहिए कि किसानों को यह चीज समझा कर जो किसान इजाजत दे , उसके खेत में गाड़े यदि कोई किसान मूर्खतावश स्वयंसेवक की सफाई की अवगणना करें तो उसे घूर पर कोई जगह तलाश करके पाखाने को गाड़ना चाहिए । इसके बाद कूड़े के ढेर के पास पहुंचे । कूड़ा दो तरह का होता है एक तो खाद के लायक जैसे साग तरकारी के छिलके अनाज,घास इत्यादि। दूसरा कूड़ा,लकड़ी पत्थर,लोहे वगैरह का इसमें खाद की योग्य कूड़ा खेत में या जहां उसे खाद की शक्ल में इकट्ठा करना हो वहां डालना चाहिए दूसरा कूड़ा जहां गड्ढी बकरे पढ़ने हो वहां ले जाकर डालना चाहिए इससे गांव साफ रहेगा और नंगे पैरों चलने वाले निश्चिंत होकर चल सकेंगे हर किसान खुद अपने घर के पाखाने का अपने खेत में उपयोग करें इसे किसी का भार दूसरे पर नहीं रहेगा और सब अपनी पैदावार में वृद्धि करने लगेंगे रास्ते में पाखाना फिरने की आदत तो कदापि नहीं होनी चाहिए खुले में सबके सामने पाखाना फिरना या बच्चों को भी घुमाना और असभ्यता है । हमें इस असभ्यता का भान तो है क्योंकि ऐसे समय कोई दिखाई दे जाता है तो हम नीचे देखने लगते हैं इसके लिए हर गांव में किसी स्थान पर सस्ते से सस्ते पाखाने बनाने चाहिए घूर की जगह ही इसे उपयोग में लाई जा सकती है भटूरे हुए खाद्य को किसान आपस में बांट ले सकते हैं जब तक किसान यह बंदोबस्त ना कर ले तब तक स्वयंसेवक जैसे रास्ता साफ करता है वैसे घर को भी साफ करें । रोज सुबह गांव वालों के निपटने के बाद नियत समय पर उसे घूर पर जाकर पाखाने बटोर कर ऊपर बताए अनुसार उसकी व्यवस्था करनी चाहिए यदि कोई जीत ना मिल सके तो मल गाड़ कर उस स्थान पर कोई निशान रखना चाहिए इससे रोज डालते जाने में आसानी होगी और किसानों को समय आने पर इस इकट्ठे किए हुए खाद का भी उपयोग कर सकेंगे ।

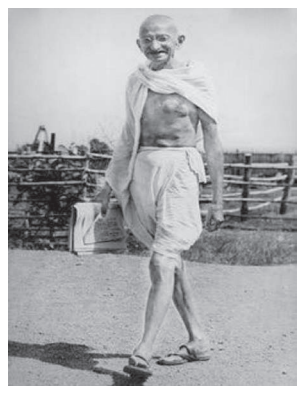

इस पाखाने को बहुत गहरे नहीं गाड़ने चाहिए धरती के 9 इंच तक की परत में बेशुमार परोपकारी जीव बसते हैं इतनी गहराई में जो कुछ हो उसकी खाद बना डालने और सारे मेल को शुद्ध करना उनका काम होता है सूर्य की किरणें भी रामदूत की भांति भारी सेवा करती । इस चीज की जांच जिसे करनी हो वह खुद अनुभव से कर सकता है थोड़े पाखाने को 9 इंच की गहराई में गाड़े और हफ्ते भर बाद यह जानने के लिए मिट्टी हटाकर देखें कि उसमें क्या हो रहा है । इसी पाखाने का कुछ हिस्सा 34 फुट की गहराई में गाड़ी और देखें कि उसका क्या हाल होता है इससे अनुभव ज्ञान मिलेगा मल को छिछला गाड़ाना पर उस पर मिट्टी पूरी ढकने चाहिए जिससे कुत्ते ने खोद सकें सके और बदबू न सके कुत्तों की रोक के लिए किसी जगह थोड़े कांटे भी डाले जा सकते हैं । अब स्वयंसेवक की समझ में आ गया होगा कि जहां वह पाखाना गाड़ता होगा वह जगह हमेशा स्वस्थ होगी ,सपाट होगी और ताजा कमाए हुए खेत से लगती होगी लकड़ी ,पत्थर ,लोहे वगैरह वाला कूड़ा भी एक गहरे गड्ढे में गाड़ना चाहिए । अथवा गांव में जो गड्ढे हो उनमें भर देना चाहिए यह भी रोज कर लेने का काम है जिससे सफाई रहे । महीने भर इस प्रकार बिना अधिक मेहनत के गांव ही घूंर सरीका न रहकर सुंदर स्वच्छ हो जाएगा पाठक देखेंगे कि इसमें पैसों का तो कुछ भी खर्च नहीं है ना इसमें सरकारी मदद की जरूरत है ना भारी वैज्ञानिक शक्ति की सिर्फ प्रेमी स्वयंसेवक की जरूरत है। यह कहने की आवश्यकता नहीं रह जाती कि जो चीज पाखाने पेशाब के लिए लागू है वही गोबर और पशु के मूत्र के लिए भी है।

सच्चा बचपन : राष्ट्रीय पोषण मिशन

राष्ट्रीय पोषण मिशन (पोषण अभियान), केंद्र सरकार द्वारा देश भर में संचालित एक प्रमुख कार्यक्रम है, इसका शुभारंभ 8 मार्च 2018 को किया गया था I जिसका मुख्य उद्देश्य 0 से 6 वर्ष तक बच्चों में कुपोषण के स्तर को कम करना और बच्चों के पोषण स्तर को बढ़ाना है।साथ ही अल्प पोषण, एनीमिया, विकास में रूकावट और जन्म के समय बच्चें के कम वज़न के साथ पैदा होने की समस्याओं के समाधान हेतु विशिष्ट लक्ष्य प्राप्ति के लिए छह वर्ष तक के बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तन पान कराने वाली माताओं की पोषण संबंधी स्थिति में सुधार हो सके। राष्ट्रीय पोषण मिशन के तहत सभी राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों को महिला और बाल कल्याण, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय, ग्रामीण विकास; पंचायती राज; शिक्षा; खाद्य तथा अन्य संबंधित विभागों के बीच निकट समन्वय के माध्यम से मिलकर लक्ष्य प्राप्त करने की ज़रूरत है।

राष्ट्रीय पोषण मिशन को सफ़ल बनाने के लिए विभिन्न स्तरों की भूमिका :-

सामुदायिक स्तर

- समुदाय सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करें।
- हर घर बच्चे और पशु के मल का सुरक्षित निपटान करें।
- घर के सभी सदस्य खुले में शौच ना करें वरन शौचालय का उपयोग करें।
- स्थानीय उपयोग के लिए समुदाय में पोषण वाटिका बनायें और सब्जियां उगाए।
- लड़कियों की शिक्षा, आहार और सही उम्र में विवाह प्रोत्साहित करें।

बच्चों के लिए

- हर नवजात शिशु को जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान कराया जाना चाहिए।
- हर शिशु को छह महीने पूरा करने पर स्तनपान के साथ दो वर्ष और उससे अधिक मां के दूध के साथ ऊपरी आहार दिया जाना चाहिए।
- हर बच्चे को सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के तहत पूर्ण टीकाकरण दिया जाना चाहिए।
- एक वर्ष की उम्र से बच्चे को विटामिन ए की निर्धारित ख़ुराक और पेट के कीड़ो की दवा/सिरप/टैबलेट वर्ष में दो बार दें।
- डायरिया/दस्त से पीड़ित बच्चे को पर्याप्त ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन और जिंक की निर्धारित ख़ुराक दी जानी चाहिए।

धात्री माताओं के लिए :

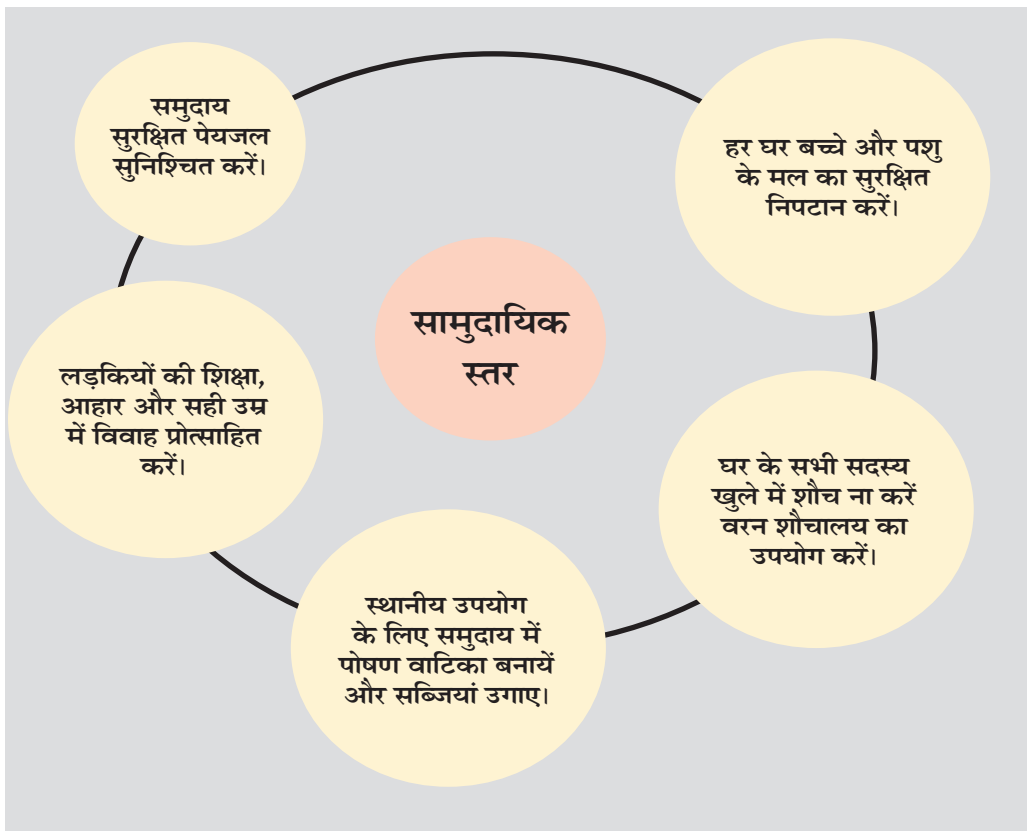

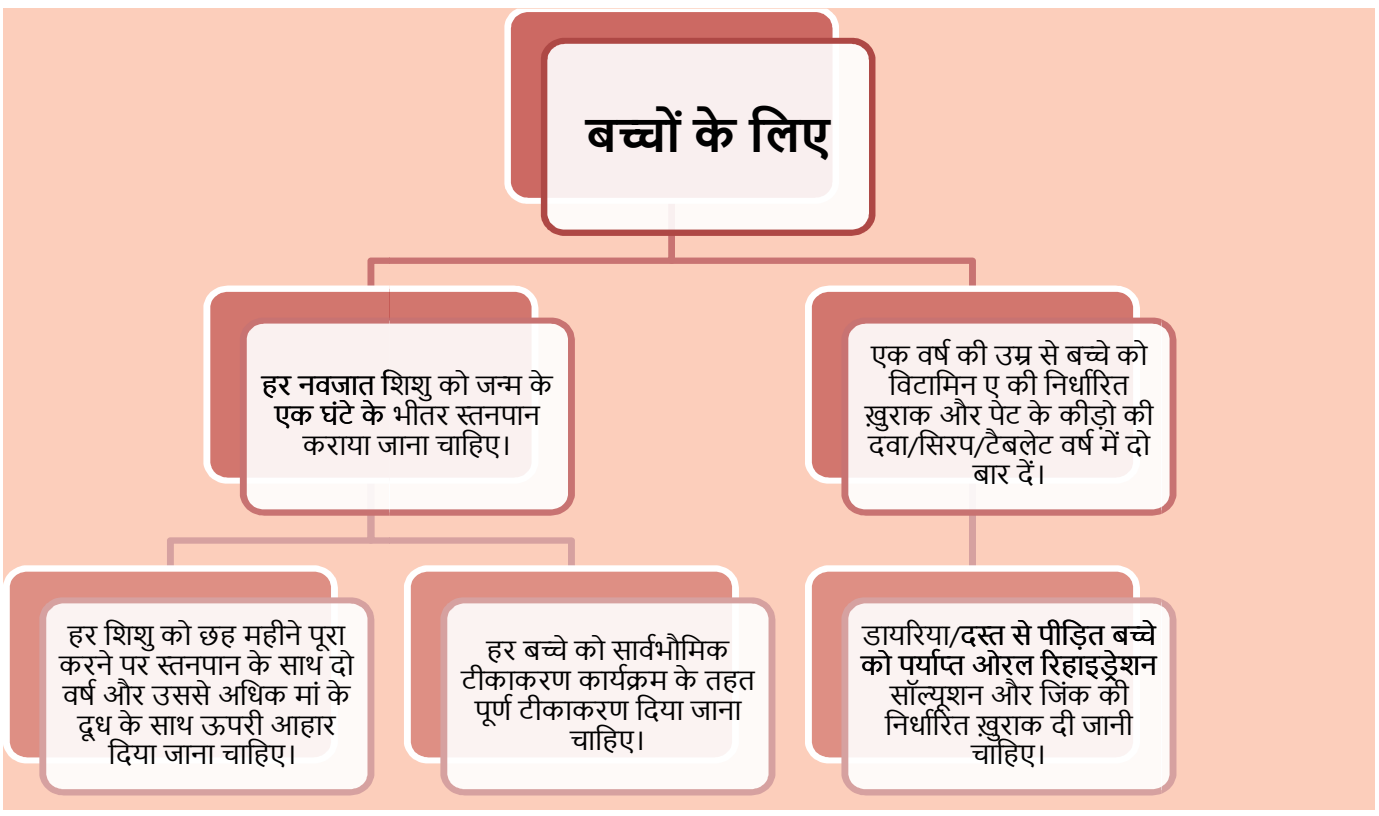

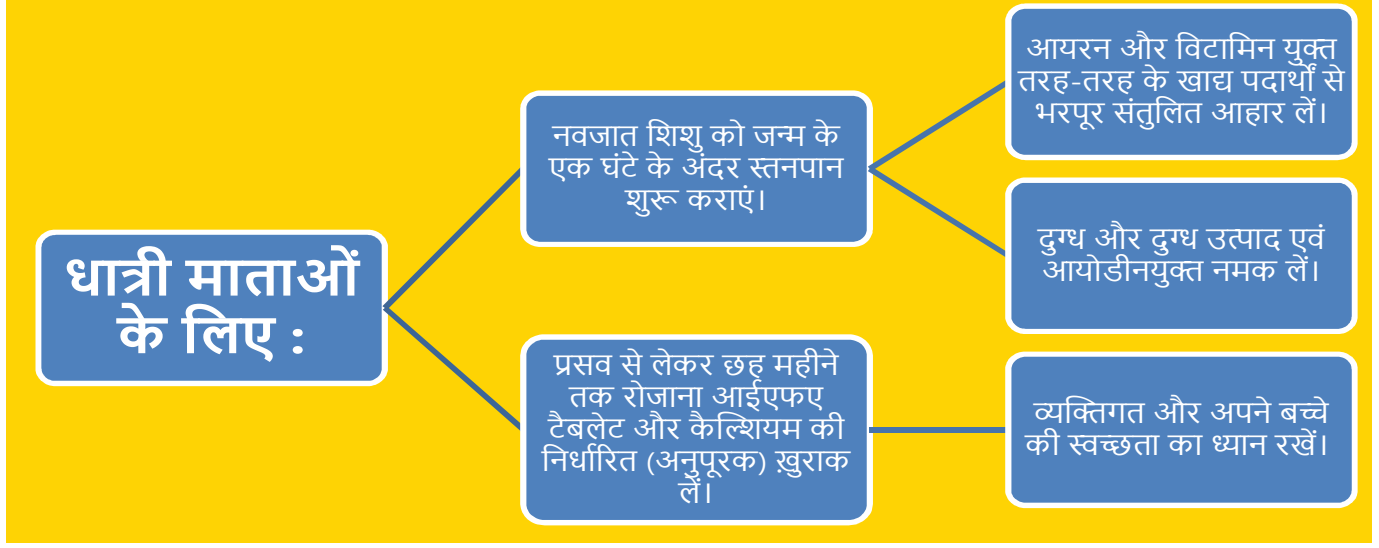

- नवजात शिशु को जन्म के एक घंटे के अंदर स्तनपान शुरू कराएं।
  - आयरन और विटामिन युक्त तरह-तरह के खाद्य पदार्थों से भरपूर संतुलित आहार लें।
  - दुग्ध और दुग्ध उत्पाद एवं आयोडीनयुक्त नमक लें।
- प्रसव से लेकर छह महीने तक रोज़ाना आईएफए टैबलेट और कैल्शियम की निर्धारित (अनुपूरक) ख़ुराक लें।
  - व्यक्तिगत और अपने बच्चे की स्वच्छता का ध्यान रखें।

गर्भवती महिलाओं के लिए :

- प्रसव से पहले कम से कम चार बार निकटतम स्वास्थ्य सुविधा केंद्र से जांच कराएं।
- आईएफए (आयरन और फोलिक एसिड) टैबलेट और कैल्शियम की निर्धारित ख़ुराक लें।
- नज़दीकी अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र पर ही अपना प्रसव कराएं।
- व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई और स्वच्छता का ध्यान रखें।
- खाने से पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ अवश्य धोएं।

किशोरियों के लिए

- आयरन और विटामिन युक्त तरह-तरह के खाद्य पदार्थों से भरपूर संतुलित आहार लें।
- दुग्ध और दुग्ध उत्पाद एवं आयोडीनयुक्त नमक लें।
- हर सप्ताह आईएफए की नीली टैबलेट लें।
- व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई और माहवारी स्वच्छता का ध्यान रखें।
- वर्ष में दो बार पेट के कीड़ों (डिवार्मिंग टैबलेट) से बचने की दवा लें।

बच्चों के अधिकारों को संरक्षित कर रहा चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा

1. हैलो चाइल्ड लाइन विद्यालय में अध्यापक समय पर नहीं आते बेवजह मारपीट करते है। हमारे पिताजी जेल में है मदद की आवश्यकता है राखी भेजनी है। हम विकलांग है कोई मदद नहीं मिल रही है पिता है नहीं माँ नाते चली गई।

2. चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा पर अलग अलग गांवों से बालक बालिकाओ के द्वारा ही संपर्क कर समस्याओ से अवगत करवाकर सहयोग हेतु मदद मांगी टीम ने आश्वस्त करते हुए कहा की हमारी टीम पूर्ण निष्ठा के साथ में सहयोग करेंगे

3. टीम के द्वारा समस्त मामलो में प्रशासनिक अधिकारीयों के साथ में घर जाकर विजिट की एवं परिवारजनो को आश्वस्त किया गया की आपके हर एक समस्या का समाधान किया जायेगा

4. सात बालक बालिकाओ के आधार कार्ड बनवाकर दिव्यांग प्रमाण पत्र जारी करवाकर पेंशन से जोड़ा गया छात्रवृत्ति दिलवाई

5 . टीम द्वारा कार्यवाही करते हुए 31 बालक बालिकाओ को उनके अधिकारों को दिलवाने में सहयोग किया जिसमे पालनहार, दिव्यांग पेंशन,सामाजिक सहयोग आधार कार्ड इत्यादि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं प्रशासन के सहयोग से गाव में नई माँ बाड़ी हेतु सर्वे

फफूंद के संक्रमण से बचाने के लिए भूसे को भविष्य के लिए चारे के रूप में ऊँचे व सूखे स्थान पर रखें।

जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

माही

समस्त साथियों को जय गुरू...

साथियों इस माह स्वराज सन्देश संवाद यात्रा का आयोजन किया जा रहा है यह यात्रा 11 सितंबर को शुरू करेंगे जिसमे यह यात्रा हमारे गांव कस्बों से गुजरती हुई जयपुर तक प्रस्थान करेगी | मुख्यत रास्ते में आने वाले गाँवो शहरो में हमारी संस्कृति को अलग अलग मंचो पर रखने का अवसर हमे प्राप्त होगा | अंत में २ अक्टूम्बर गाँधी जयंती के अवसर पर हम सभी मिलकर इस यात्रा को बड़े पैमाने पर जयपुर में समागम का आयोजन कर रहे है ताकि यह प्रयास हमारा राज्य और यहाँ की विभिन्न इकाई इसे देख सके और हमें हमारी आवश्कतानुसार आगे अवसर प्रदान कर सके माननीय श्री जयेश भाई के साथ इस कार्यक्रम को हरी झंडी दिखा कर इस यात्रा का शुभारम्भ करेंगे जिसके बाद यह यात्रा हमारे क्षेत्र घाटोल एवं पीपलखूंट होते हुए जयपुर को प्रस्थान करेगी इसमें हमारी इकाई से व विभिन्न संगठनो के साथी यात्रा से जुड़ने के लिए तत्पर है | वाकई मैं स्वयं भी इस यात्रा को लेकर काफी उत्सुक हूं जब हम इस यात्रा में शामिल होंगे तो हमारे जीवन में एक अध्याय और जुड़ेगा की हम उस समय हमारी संस्कृति को बचाने में या दुनिया को बताने का हिस्सा बने थे |

सच्चा स्वराज - इस माह में हमारे संगठनो ने ग्रांम विकास की योजना को लेकर ग्राम स्तर तक कार्य किया जो काफी सराहनीय रहा जिसमे हमारे सभी संगठनो ने अभी तक विकास की योजनाओ से वंचित परिवारों का PLA के माध्यम से चयन कर इन सभी परिवारों को ग्राम सभा तक ले जाने में सक्षम हुए और साथ ही महात्मा गाँधी नरेगा की कार्ययोजना में मृदा सरक्षण पर विशेष ध्यान दिया और अधिक से अधिक वंचित परिवारों के कार्य अनुमोदित करवाए गए |

इसी क्रम में इस माह हमारे कार्यक्षेत्रों में 02 अक्टम्बर को ग्राम सभा का आयोजन किया जाना है जिसमे हर खंड के एक स्थान पर जल स्वराज, मिटटी स्वराज ,बीज स्वराज ,वन स्वराज ,खाध्य एवं पोषण स्वराज एवं वैचारिक स्वराज को ध्यान में रख कर जल सरक्षण के तरीके इसका महत्त्व,मिट्टी की वर्त्तमान स्थिति, रासायनिक जाल से छुटकारा,बीज का हमारे जीवन में महत्त्व उन्नत बीज का प्रयोग,हमारे वनों से उपज लेना ,पोषण के लिए हमारे छोटे बीज एवं इनका उपयोग ,आपसी संवाद ग्राम विकास को लेकर ग्राम चोपाल और पशुपालन और इसके दुरगामी परिणाम पर विस्तृत प्लान हम ग्राम सभा में विभिन्न मतों से जोड़ेंगे

सच्चा बचपन - इस बार हमारे लिए सबसे सुखद अनुभव रहा की हमारे बच्चो के विद्यालय लम्बे अंतराल के बाद खोले गए है जिससे बच्चे एक बार पुनः शिक्षा की धारा से जुड़ जाएँगे. इस माह हमारे संगठनो में से अमर सिंह का गढ़ा,घाटोल,चंदू जी का गढ़ा और भुंगड़ा की ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के सदस्यों ने विद्यालय से वंचित बच्चो को चिन्हित कर एक बार और विद्यालय प्रशासन के साथ मिलकर पुनः शिक्षा की धारा से जोड़ने में सफल रहे | इस बार हमारे विभिन्न संगठनो ने अपने मार्फत से प्रशासन गाँवो के संग के माध्यम से 22 बच्चो को पालनहार योजना से जुड़वाया जो वाकई संगठनो की बड़ी सफलता है, साथ ही इनको ग्राम स्तर से सूचि बनाने में भी हमारे ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, सक्षम समूह और बच्चो के लिए कार्यरत उनकी खुद की समिति बाल पंचायत ने भी अपनी मुख्य भूमिका निभाई है |

साथियों हमारे बाल पंचायत पर बात की जाए तो इस बार ग्राम विकास योजना के तहत ग्राम सभा में गाँव में खेल मैदान का प्रस्ताव रखा है जिससे हमे अब महसूस हो रहा है की हमारी बाल पंचायत सशक्त होने के कगार पर आई है साथ ही गाँव में विभिन्न बच्चो से जुड़े मुद्दों पर भी इस माह 67 बाल पंचायत ने बैठक आयोजित की जिसमे मुख्यतः बच्चो के बाल श्रम, शिक्षा से वंचित बच्चो की सूचि बना कर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के समक्ष प्रेषित की ताकि गाँव का बड़ा संगठन इसको बारीकी से देख सके.

सच्ची खेती-हमारे किसान परिवारों से चर्चा के पश्चात् ज्ञात हुआ की इस बार वर्षा की अतिवृष्टि होने के कारण हमें उत्पादन के अनुरूप उपज नहीं मिलेगी जिसका हमे और हमारे किसान परिवारों को दुःख है | साथियों इस बार मुझे हमारे पूर्वजो की फसल तकनिकी बहुत याद आई आपको ध्यान हो तो हमारे पुर्वज कभी एक फसल नहीं करते उनको पता रहता की अगर बारिश अधिक हो गई तो मेरी ये फसल तो नष्ट हो जाएगीऔर कम हुई तो ये फसल नष्ट हो जाएगी तो इन सब चक्र को समझते हुए हर फसल का चयन करते जिसमे होता ये की हमें आज से 20 वर्ष पूर्व हर प्रकार का अनाज मिल जाता परन्तु अब ..... हमें सोचना पड़ेगा की अब क्या कर सकते है और कहाँ पहुँच गये है परन्तु साथियों हमे हार नहीं माननी है हम अगले वर्ष से ही रबी फसलो में भी हर प्रकार का अनाज या दाले उगाएंगे ताकि हमे हर अनाज या दाले मिल सके |

साथियों हमारे क्षेत्र में भी किसान बहने देशी तरीको को एक बार पुनः समझ रही है और अपने खाने के उपयोग के लिए देशी बीज,देशी खाद का उपयोग कर रही है साथ ही पशुपालन को बढ़ावा भी दे रही है |इस बार हम रबी में बारिश होने के बाद दो बार खेत की जुताई करते हैं । सूखा क्षेत्र होने के कारण वर्ष में एक ही बार फसल की बुवाई करते हैं। फसल का चयन करते समय अलग-अलग लम्बाई की जड़ों (मूसला व जकड़ा जड़) वाली फसल जैसे- गेहूं, चना, अलसी, सरसों आदि की बुवाई एक साथ करते हैं। क्योंकि कठिया गेहूं की जड़ दो से तीन इंच लम्बी होती है, चना की जड़ 6 से आठ इंच तक लंबी होती है, जबकि अलसी एवं सरसों की मूसला जड़े चार से पांच इंच तक लंबी होने के कारण पौधों को निरंतर नमी मिलती रहती है और उत्पादन अधिक होता है। घर पर संरक्षित व सुरक्षित देशी बीजों का प्रयोग करते हैं तो निश्चित ही हम सफल होंगे .....

प्रत्येक गांव में मुहिम चलाओ,बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ.....।

हिरन

जनजातिय स्वराज संगठन हिरन के सभी कर्मठ स्वराज साथीयों व पाठको को जय गुरु.....

सच्चा स्वराज :- सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो के 310 ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक हुई बैठक में ग्राम चोपाल के अंतर्गत पूर्व बनाये गए प्लान की आगे कार्यवाही की जानकारी ली गई, साथ ही नई योजना बनाने पर चर्चा हुई, नई रणनीति बनाई गई | स्थानीय मुद्दों को परम्परागत तौर पर समाधान किया एवं जटिल मुद्दों को पेरवी के लिए आगे ले जाया गया |

इस माह सभी 09 जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमे पशु में फेल रहे लम्पी वाइरस की रोक थाम के लिए ब्लॉक स्तर पशु में और पंचायत स्तर पर ज्ञापन दिए गए | फसल खराबा पर मिलने वाला सहयोग हेतु ज्ञापन दिया गया पशु टीकाकरण हेतु ज्ञापन दिया गया जोकि JSS के माध्यम से दिया गया और आगे फॉलोअप की जिम्मेदारी जनजाति स्वराज संगठन की है, ये सभी कार्य करने में मुख्य भूमिका सहजकर्ता, स्वराज मित्र एवं सक्षम समूह, ग्राम विकास बाल अधिकार समिति एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों की रही | सभी संगठन की बैठक मै संगठन की मजबूती हेतु शपथ ली गई |

सच्चा बचपन :- सच्चा बचपन के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो में से 309 गाँवो में ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक का आयोजन किया जिसका उदेश्य ग्राम सभा में सम्मलित ग्राम विकास योजना का फोलोअप एवं बालिका शिक्षा और ड्राप आउट बच्चो की सूचि तैयार कर उन्हें शिक्षा से पुनः जोड़ना व अनाथ बच्चो को पालनहार योजना से जोड़ना रहा|

इस माह 97 ग्राम पंचायतो में बाल सभा का भी आयोजन किया गया जिसमे बच्चो को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल खेल के माध्यम से बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास करना रहा व बच्चो में नेत्रत्व क्षमता का विकास करने पर चर्चा की गई |

पोषण के तहत विद्यालय में सर्वे किये गए जिसमे बच्चों की हेल्थ जैसे खून की जाँच, वजन, लम्बाई और भुजा का माप लेकर किया गया |

सच्ची खेती:- सच्ची खेती कार्यक्रम के 356 गावं में वाटर बॉडी सर्वे किया गया एवं फील्ड फार्मर स्कूल की ट्रेनिंग का आयोजन किया गया | साथ ही साथ 356 में से 329 सक्षम समूह की बैठक की गई |

जैसा की यहाँ समय पानी आने का हो गया तो बीज को उपचार करके ही बोने पर बात रखी बैठक के दौरान बीज विविधता पर अभ्यास(मिश्रित खेती) पर चर्चा , अनुमानित उत्पादन , फसल की स्थिति पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई | वर्तमान परिस्थिति में अधिक उत्पादन पैदावार के लिए समुदाय द्वारा रासायनिक खाद और दवाई व कीटनाशक का उपयोग ज्यादा किया जाने लगा है जिसके कारण लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगा है इस हेतु बैठक में महिलओ को शपथ दिलवाई गई की वे परम्परागत खेती को अपनाये इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था द्वारा जैविक खेती जिसके अंतर्गत वर्मी खाद कम्पोस्ट पिट वकीटनाशक हेतु दशपर्णी दवाई व बीज उपचार आदि पर जनजातीय समुदाय के 356 गाँवो में महिला किसानो का प्रत्येक गाँव में एक समूह बना हुआ है | उस समूह को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव और रिश्तेदारो में अन्य किसानो को जैविक खेती के बारे में जागरूक करने का काम किया जा रहा है | वागधारा संस्था द्वारा सच्ची खेती के अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस माह में PGS जैविक ग्रुप की कुल 98 मीटिंग हुई है जिसमें जैविक कृषि संबंधी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जागृत किया गया है तथा जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया हैतथा अधिक से अधिक किसान को जैविक कृषि में रुचि रखते हैं उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है |

हलमा कर फसल में से खरपतवार निकलते हुए

चित्र में सहमति पत्र देते हुए |

मानगढ़

मानगढ जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की ओर से सभी पाठकों को जयगुरू

स्वराज के लिए जयपुर तक पदयात्रा...

हमारे आदिवासी समाज के लम्बे समय से चले आ रहे मुद्दों को प्रभावी तरीके से रखने और जल, जंगल, जमीन, पशु, बीज, खाद्य और पोषण स्वराज, बाल अधिकार आदि से जुडी मांगो को नीति निर्माता तक पहुँचाने के उद्देश्य से राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के सभी जनजातीय स्वराज संगठनों के नेतृत्व में तथा वागधारा के सहयोग से आदिवासी समुदाय के द्वारा स्वराज संदेश संवाद पदयात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 11 सितंबर 2022 को वागधारा परिसर कुपडा से प्रारंभ होकर 1 अक्टुबर 2022 को जयपुर तक आयोजित की जायेगी। जयपुर में दिनांक 2 अक्टूबर 2022 को महात्मा गांधी जी की जंयती के उपलक्ष्य में "स्वराज आग्रह सम्मेलन" राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम आयोजित किया जावेगा । इस समागम में देश भर से आए विशेषज्ञ, विचारक, प्रमुख रूप से आदिवासी क्षेत्र के हजारों लघु व सीमांत कृषक एवं स्वराजी भागीदारी करेंगे।

सितम्बर माह, हमारे गाँव मे बनी ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितीयों, सक्षम समूहों और जनजातीय स्वराज संगठनो की सक्रियता के स्तर को आंकलित करने का भी माह है. जिसमे स्वमुल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाते हुए संगठन के सदस्य स्वयं के संगठन का स्वमुल्यांकन करेंगे। पिछले छह माह में संगठन की बैठकों में की गई सहभागिता, मुद्दों के प्रति सक्रियता और किये गए प्रयासों का स्वमुल्यांकन कर प्राप्त परिणामों के आधार पर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए चर्चा करेंगे।

सच्चा बचपनः बच्चों में कुपोषण को ख़त्म करने के उद्देश्य से पुरे देशभर में राष्ट्रीय पोषण माह का आयोजन किया जाना है. गाँव-गाँव और घर-घर पोषण के प्रति समुदाय अभिप्रेरित जनांदोलन बनाने के लिए पोषण पंचायत आयोजित की जावेगी जिसमें सभी विभागों के प्रतिनिधि शामिल होंगे. वाग्धारा संस्था के द्वारा गांगडतलाई और आनंदपुरी के १२०० विद्यालयी बच्चों का स्वास्थ्य परिक्षण कर पोषण के स्तर को नापा जावेगा |

सच्ची खेती के अंतर्गत दाहोद जिले के विकासखंड में संस्था के द्वारा किसानों को उन्नत कृषि तकनीको के साथ ही समेकित खेती प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए 15 गाँवो में कृषक पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है | इस पाठशाला में नई कृषि तकनीकों से सम्बंधित प्रदर्शन प्रक्षेत्र विकसित कर किसानों को जागरूक किया जा रहा है. सहजकर्ताओं के द्वारा २९५० किसान परिवारों के यंहा फसल प्रदर्शन प्लाट लगाये गए. जिनका नियमित आगे की कार्यवाही करके उन्हें इनपुट दिए गए है. इसके अतिरिक्त स्वराज मित्रों के द्वारा सक्षम समूह के दौरान कृषि आधारित बैठक के बाद प्रायोगिक प्रदर्शन भी किया जा रहा है जिससे महिला कृषक बताई गई तकनीक को आसानी से सीखकर अपना रही है एवं खेती की लागत को कमकर उत्पादन में वृद्धि कर रही है |

जैसे-जैसे शुष्क मौसम आ रहा है, आप मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए शकरकंद जैसे लताओं का उपयोग मल्चिंग के रूप में भी कर सकते हैं।

सितंबर में उगाई जाने वाली सब्जियां और कृषि एवं बागवानी कार्य

कृषि के कामों में निरन्तरता से सभी परिचित हैं। अच्छे मानसून के चलते खरीफ फसल में अच्छी पैदावार होने की उम्मीद दिख रही है। सितम्बर की वर्षा दोनों फसलों खरीफ – रबी के लिए जरूरी और महत्वपूर्ण है। कहावत है मां के परसे और मेघा के बरसे अर्थात् माता यदि खाना परसे तो पेट भर जाता है और मेघा के बरसने से फसल तृप्त हो जाती है। खरीफ खेतों में बखर करके भूमि में नमी का संचार और संग्रहण अच्छी रबी के लिये बहुत जरूरी है अनुभव बतलाते हैं कि खरीफ पड़ती में जितने बार बखर होकर नमी का संरक्षण होगा रबी फसलों के बीजों के अच्छे अंकुरण का मार्ग प्रशस्त होता रहैगा इस कारण आज से ही रबी की तैयारी का शंखनाद शुरू किया जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि असिंचित खेती से पर्याप्त उत्पादन तभी मिलेगा जब वर्तमान में ही खेत की तैयारी पर पूर्ण ध्यान दिया जाये

भूमिगत तापमान वातावरण के तापमान से अधिक होता है। इस वजह से बुवाई हैतु फसलों का चयन भी उसी पर निर्भर रखा जाये, बगैर अंधाधुंध तरीके से कभी

भी कोई भी फसल की बुवाई करके स्वयं का नुकसान कदापि नहीं किया जाये। रबी फसलों की बुवाई का क्रम , मटर, , चना से शुरू होकर सबसे आखरी में गेहूं पर समाप्त होना चाहिये। कहीं-कहीं तो यह भी देखा गया है कि असिंचित भूमि में जलवायु पर विचार किये बिना सिंचित गेहूं की बौनी किस्मों की बुवाई भी भरपूर उर्वरक डाल कर दी जाती है। परिणाम स्वरूप अल्प अवधि में ही गेहूं में बाली निकल कर पोचादाना हाथ लगता है इस कारण जरा सम्भल कर सोच-समझ कर तापमान की परख करने के बाद ही गेहूं की बुवाई करें |

सवाल भूमिगत नमी का तो बखरनी पसटारनी पाटा चला-चलाकर उसका संरक्षण करते रहना चाहिये ताकि अच्छा अंकुरण मिल सके गेहूं की बुवाई के लिये 26 डिग्री से.ग्रे. के आसपास का समय ठीक रहता है।

रबी सीजन में अगेती फसल लेने के लिए थोड़े क्षेत्र में शकरकंद तथा मसाला फसलें लेकर अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मसाला फसलों एवं सब्जियां जैसे - बैगन, टमाटर, फूलगोभी, पालक, मेथी, गाजर, मुली,में धनिया, लहसुन, प्याज, हाथों-हाथ बिकने वाली फसले है अच्छा पैसा भी मिलना संभव है जिसकी बुवाई पूर्व बीज की प्राप्ति के लिये अभी से प्रयास जरूरी है। प्रकृति की कृपा है खरीफ तो अब अच्छा पैदा होने की पूर्ण सम्भावनायें हैं, अब रबी का शंखनाद खेत की तैयारी से शुरू करके उज्जवल भविष्य की नींव रखें।

इस महीने में कृषि मुख्य तथ्य

सितम्बर माह में सब्जियां एवं बागवानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ सब्जियां के खेतों में जैसे फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, बैगन, मिर्ची, गाजर, मूली आदि को लगाने की तैयारी की जा सकती है। इस माह कुछ अन्य सब्जियां भी लगा सकते हैं। जैसे आलू, जो जल्दी पकते हैं, उसे बोया जाता है।

आम के लगाये गये नये पौधों की सुरक्षा करते हैं।

धनिया, देशी मटर, प्याज, मूली, गाजर, चुकन्दर, सेम, सौफ, देर से आने वाली गोभी, पालक की बुवाई करते हैं।

यदि खेत मक्का, बाजरा, तिल, लोबिया, मूंग, उडद फसलों के कटने से खाली हो तो तोरिया की फसल सितम्बर के पहले हप्ते लगा दें, ये गेहूं बोने से पहले नवम्बर में पक जाती है ।

मूँग/उड़दः

इस माह में मूंग एवं उड़द में जो फली पक रही है उसको तोड़ कर घर आंगन में सुखाये फली छेदक कीट की सूड़ियाँ, जो फली के अन्दर छेद करके दानों को खाती हैं, को रोकथाम के दशपर्णी अर्क या नीम का ओइल सलाह के अनुसार छिड़काव करे।

सब्जियों की खेतीः

सितम्बर माह सब्जियों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। जल्दी आनेवाली सब्जी नर्सरी करना आवश्यक है जैसे फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, बैगन, मिर्ची आदि सब्जी की नर्सरी इस माह के पहला सप्ताह में करनी जरूरी है ।

मेथी की अगेती फसल के लिए 15 सितम्बर से बोआई कर सकते हैं। इसके लिए प्रति हैक्टेयर 25-30 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।

सब्जियां

बैंगन – यदि किसान के पास खेत खाली है तो आप बैंगन रोपाई कर सकते है यदि अपने बेंगन 1 माह पहले बोये है तो उसमे कम्पोस्ट खाद 5 क्विंटल बाद में हर सिंचाई के साथ जीवामृत देना नही भूले, जिस किसान के पास वर्मी कम्पोस्ट है वो 1 माह के बाद निराई गुड़ाई करके प्रति पौधा 250 ग्राम के हिसाब से दे सकता है । बीमारियों से बचाव

के लिए बीज उपचार ही उत्तम विधि है ।

टमाटर – सितम्बर में टमाटर करने के लिए अपने टमाटर की नर्सरी तैयार कर दी होगी यदि टमाटर के पोधे आपके पास नहीं है और आपको अगेती फसल करनी है तो आप गाँव के जानकर से पौधे लेकर बुवाई कर सकते है उसके लिए आपको उपरोक्त बेंगन में खाद की मात्र दर्शाई गई है उसके आदर पर उपयोग करके बुवाई करनी है ।

5 .फुल गोभी व पत्ता गोभी – अगस्त माह में की गई फुल गोभी व पत्ता गोभी पौधे की नर्सरी में तैयार हो गये होंगे । हल्की दोमट मिट्टी में 4-7 हप्ते पुरानी पौध को 1.7 फुट की दुरी पौध तथा लाइनों में रखे । रोपाई के बाद सिंचाई 7-10 दिन के अन्तराल में करते रहे । फसल में निराई गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाना जरुरी है । खेत में रोपाई से पहले 1 एकड़ के हिसाब से 1 टन कम्पोस्ट खाद डालना आवश्यक है । साथ में आप लाईन करके पाला बनाकर उसके ऊपर पौध लगाते समय वर्मी कम्पोस्ट डालकर पौध लगाने से काफी वृद्धी हो सकती है । बीमारियों के बचाव के लिए पौध को 2-3 ग्राम कैपटान प्रति लीटर पानी में घोलकर डुबोयें ।इसके बाद भी बीमारी से बचाव के लिए नीम आधारित दवाई, दशपर्णी, एवं खट्टी छाछ का प्रयोग पहले दी गई सलाह लेकर उपयोग कर सकते है ।

6. पालक व मेथी - पत्तों वाली सब्जियों में कैलसियम, लोहा, विटामिन ए, बी, व सी काफी मात्रा में होते हैं । पालक व मेथी हल्की मिट्टियों में तथा ठण्डे व शुष्क मौसम में अच्छे होते हैं । दोनों सब्जियों को सितम्बर के शुरू में बीज दें । उन्नत किस्में हैं - पालक-आल ग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित । मेथी - पूसा अर्ली बंनचिग व मैथी कसूरी किस्में 7-8 कटाई देती हैं । दोनों फसलें 100-200 क्विंटल प्रति एकड पैदावार देती है । खेत तैयार करते समय 10 टन कम्पोस्ट का प्रयोग करना जरुरी है पालक के लिए 10 कि.ग्रा.बीज को 1 फुट दूर लाईनों में लगायें । पौधे के बीच 4-6 ईंच का फासला रखें । सिंचाई प्रत्येक सप्ताह करें तथा दो बार खरपतवार निकालें। सिचाई के समय जीवामृत का प्रयोग अवश्य करें।

बागवानीः

सितम्बर माह में सदाबहार पेड जैसे नींबू जाति के फल, आम, बेर, अमरूद लगा सकते हैं । बाग लगाने से पहले 3 x ३ फुट के गढ्ढे खोद लें । गढ्ढे की उपर की मिट्टी को बराबर सड़ी-गली देसी खाद से मिलाकर तथा २ कि.ग्रा.जिप्सम भी डालें ।

मुर्गीपालनः

मुर्गी, खाने में कैल्शियम प्राप्ति के लिए चुना वाला पानी पिलाये ।

पेट के कीड़ों को मारने के लिए दवा दें।

मुर्गी खाने के दाने को 14-16 घंटे प्रकाश उपलब्ध करायें। ताकि गैस निकल जाये

पशुपालन/दुग्ध विकासः

खुरपका-मुँहपका रोग की रोकथाम के लिए टीका लगवायें। इस रोग से ग्रसित पशुओं के घाव को पौटेशियम परमैग्नेट से धोएँ।

नवजात बच्चों को खीस (कोलस्ट्रम) अवश्य दें।

मेस्टाइटिस (थनेला)रोग का पता लगाने हेतु दूध की जॉच करायें।

सभी पशुओं को पेट की कीड़े मारने की दवा पिलाये।

स्वच्छ दूध उत्पादन हैतु पशु की और दूध के बर्तन आदि की सफाई का ध्यान रखें।

बीमार पशु को अलग रखे ताकि दुसरे पशु को बीमारी नहीं लगे।

सच्चा स्वराज

ग्रामीण भारत में अपने स्वशासन की व्यवस्था का लंबा ऐतिहासिक प्रमाण रहा है। वैदिककाल में गांव की व्यवस्था मुखिया के द्वारा होती थी। इस काल में ग्राम सभा होती है जिसमें सभी भाग लेते है और जिसका निर्णय सर्वोपरि होता है |: गांव के हित में योजना बनाना, बजट पारित करना, कर एकत्रित करने के नियम बनाना, योजनाओं को लागू करना, सार्वजनिक संपत्तियों की रक्षा करना, लाभार्थियों का चयन करना, जन सहभागिता निभाना तथा जनसुनवाई के माध्यम से पारदर्शिता एवं जवाबदेही लाने जैसे दायित्वों को लेकर ग्रामसभा की महत्वपूर्ण भूमिका है। हम इस माह ग्राम सभा के कार्यो के बारे में जानेगें :

स्वराज यात्रा में चलो

स्वराज यात्रा में चलो

स्वराज संदेश – संवाद पदयात्रा

बांसवाड़ा से जयपुर

आचार्य विनोबा भावे की जयंती दिनांक 11 सितम्बर 2022 से प्रारंभ होकर महात्मा गाँधी जयंती 02 अक्टूबर 2022 तक

स्वराज यात्रा में चलो

ग्राम पंचायत विकास योजना

योजना और मानव संसाधन
1) प्लानप्लस - सभी डेटा
2) अभिसरण के माध्यम से मानव संसाधन
3) सामुदायिक कैडर- प्रदर्शन आधारित
4) ग्राम सभा

आर्थिक गतिविधि
1) फॉर्म आजीविका
2) गैर फॉर्म आजीविका
3) मजदूरी रोजगार के लिए कौशल
4) महिला कौशल/आजीविका
5) बैंक ऋण

मानव विकास
1) स्वास्थ्य सुविधाएँ/पोषण
2) चिकित्सा उपलब्धता
3) गांव स्कूल
4) लड़कियों की शिक्षा
5) किशोर स्वास्थ्य

निगरानी
1) दिशा डैशबोर्ड
2) प्रिया सॉफ्ट
3) ग्राम संवाद
4) सामाजिक लेखा परीक्षकों के रूप में एस.एच.जी. महिलाएँ

संसाधन संघटन
1) राजस्व के स्त्रोत
2) प्राथमिकता की पहचान
3) बैंक लिंकेज
4) अभिसरण
5) संयुक्त फण्ड
6) समुदाय/घरेलु

कार्यान्वयन
1) जियो टैगिग-पहले, उस दौरान, बाद में
2) सार्वजनिक जानकारी
3) मजदूरी और सामग्रियों के लिए आई.टी./डी.बी.टी. स्थानान्तरण
4) सामाजिक/आंतरिक लेखा परीक्षा

बुनियादी ढांचे का विकास
1) गांव, सड़कें और नालियां
2) सड़क की बत्तियाँ/पथ प्रकाश
3) ठोस और तरल संसाधन प्रबंधन
4) बिजली/एलपीजी गैस
5) आवासन/एस.बी.एम.

जन योजना अभियान का उद्देश्य

- निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों और महिला (स्वयं सहायता समूह) को मजबूत बनाना
- सार्वजनिक सूचना बोर्ड के माध्यम से योजनाओं और संसाधनों की व्याख्या करना
- **उचित ग्राम पंचायत बैठकों का आयोजन**
- 29 समर्पित विषयों में किए गए प्रगति के प्रमाण पर आधारित मूल्यांकन
- ग्राम पंचायतों को समग्र विकास योजना प्रदान करने के लिए योजना प्लस को मजबूत बनाना

समन्वित खेती के प्रमुख घटक

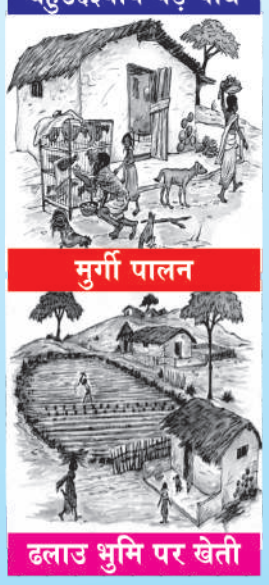

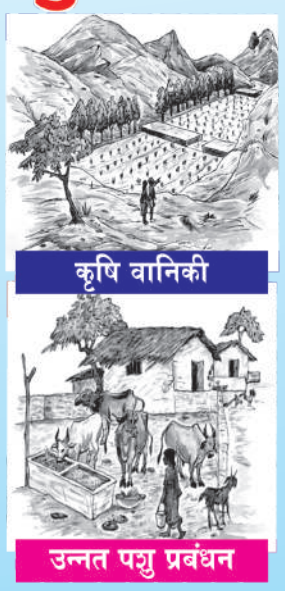

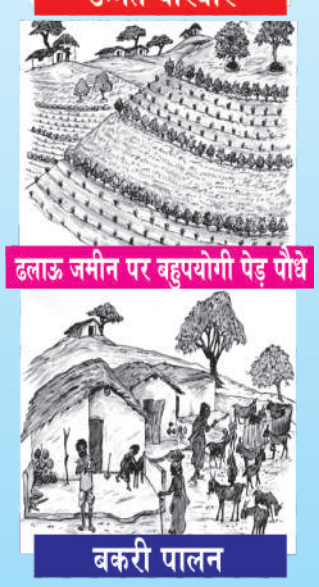

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वागधारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें–
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वागधारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार । मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार । संकलक सहयोगकर्ता : जागृती भट्ट ।